Part 1

प्रश्न (26) प्रो0 तन्त्रनाथ झा 'नूतन वत्सर ' शीर्षक कविताक माध्यमसँ देल गेल संदेश कँ वर्णन करू

उतर - प्रो0 तन्त्रनाथ झा जन्म 22 अगस्त 1909 कँ भेलनि । हिनक पैतृक गाम धर्मपुर , उजान दरभंगा जिला छलनि । ई अर्थशास्त्रक प्राध्यापक सी0 एम0 कॉलेज ,दरभंगा मे छलाह । हिनक निधन 4 मई 1984 कँ वाराणसीमे भेलनि । प्रो0 झा मैथिलीमे महाकाव्य , मुक्तकाव्य , एकांकी निबंधक रचना कैलनि। हिनक मुक्तक काव्यमे विषय - वस्तुक व्यापकता एवं शिल्प शैली विविधता अछि । एक दिस ई प्राचीन डंगक ईश - बन्दनाक रचना कैलनि त दोसर दिस महाकव्यमे विलक्षण अभिसारक रचना देखल जा सकैछ । ओहिना अंग्रेजीक सॉनेट ,ओड आदि । काव्यशिल्पकँ मैथीलिमे प्रतिष्ठापित कयने छथि जे लोकप्रिये भेल । हिनक काव्य - प्रेरणाक मूल उत्स थिक पाश्चात्य साहित्य जकरा ई अपन मौलिक कवि प्रतिभासँ परिमार्जित कएल अछि ।

नूतन वत्सरमे कालक गीत शतत् तरंगित रहैत अछि आ गतिमे द्रुतता अछि । मुदा जन समान्य एहि गतिक बोधकँ चिंतन नहि करैत छथि । सृष्टिक प्रारम्भसँ कालक हति एकसमान गतिमान अछि । वर्तमानक क्षण - क्षनकँ भूत घोषित करैत काल गतिमान अछि9 । जेना बसातक गतिसँ जलासय वा सागरमे तरंग उठैत अछि आ डुबैत अछि ई क्रम अनबरत चलैत आबि रहल अछि । तहिना समयक गति पल - पल वर्तमानकँ भूत के घोषित करैत गतिमान अछि । तँ एक पै9घ्य अंतरालक बाद नव वर्ष अबैत अछि , जाइत अछि । यथा -

भूत - सिन्धु जल - बिच भासल चल जाए ।

वत्सर , काल - तरंग तरंगीत भेल ।

द्रुतगामी रथचक्र फेर घुरि गेल

नीरव आयुक पथ पर बिनसल हाए ।

सभक जीवनक निर्धारित समय अतिशीघ्रतासँ छटैत जा रहल अछि । मुदाअ हमरा सभक बीचक लोकमे ई भ्रांत धारण अछि जे ओ आब बढिकँ पांच बरखक भ गेलाह त दस बरखक भ गेलाह । ई हिनकर बीसम , एकैसभ जन्मवर्षक थिकैन्ह , ओहि अवसर हर्षित भ उत्सव मनबैत अछि । मुदा सत्य त एकर उनटा अछि । जेना किनको लग सौट टाका छन्हि ओ आब खर्च करैत करौत आब बीस टका बचल छन्हि

। तखन ओ एकैक टकाक वस्तु ओ नहि कीनि सकैत छथि । एहिमे ओ पूर्णतः असमर्थ छथि । तहिना हमरा सभक जीवनक अछि । अपन समय खर्च करै - करैत जखन शेष शून्य भ जाइत त जीवनक पल समाप्त भ जाइछ । बरबस मृत्यू के वरण करैत अछि । परंच लोक भ्रांत धारणा मे आयुक पथ पर मृत्यु दिस अग्रगामी होइते हँसैत रहैत अछि । एहि कालक गतिमे कतोकोकँ हृदय मरूस्थल भ जाइत जेना मरूस्थलमे गाछ - बिरीछ सुखाइत अछि तहिना आशा - अभिलाषा शेष रहि जाइत्र अछि ओ सभ निष्फल

“ कए कोन साहस रोपब तकरहि जाए ?

बढल समय , डबल जीवन - रवि क्षीण ,